|  |
| --- |
| 06. August  |
| **Fest der Verklärung des Herrn** |
| Erste Lesung: Dan 7,9-10.13-14 oder 2 Petr 1,16-19; Evangelium: Mk 9,2-10 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 357, 1+5 | Wie schön leuchtet der Morgenstern |
|  | GL 372, 1-3 | Morgenstern der finstern Nacht |
|  | GL 412 (Kanon) | Die Herrlichkeit des Herrn |
|  | GL 142, 1 | Zu dir, o Gott, erheben wir |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 160 | Gott des Vaters ewger Sohn |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 701 | Lasst uns Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 97, 1-2.5-6.8-9 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 52, 1 | Herr, du bist König |
|  | oder |  |
|  | GL 392, 1+5 | Lobe den Herren |
|  | GL 360, 1+3 | Macht weit die Pforten |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 7 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Aus der leuchtenden Wolke rief die Stimme des Vaters:* |
|  | *Das ist mein geliebter Sohn;* |
|  | *auf ihn sollt ihr hören.* |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 363, 1-3 | Herr, nimm auch uns zum Tabor mit |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 196 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 331, 1+2+6 | Ist das der Leib |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 364, 1+3+5 | Schönster Herr Jesu |
|  | GL 481, 1+6 | Sonne der Gerechtigkeit |
|  | GL 334, 3 | O Licht, viel heller als der Tag |
|  | GL 216, 1!-3 | Im Frieden dein |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 455, 4 | Alles meinem Gott zu Ehren |
|  | GL 452, 1+4 | Der Herr wird dich mit seiner Güte  |